

भारतीय ज्ञान परंपरा में भित्ति चित्रों का महत्व

डॉ. भक्ति अग्रवाल

सहायक प्राध्यापक (ललितकला)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

प्रस्तावना

भारत की कला परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है। भित्ति चित्र (Mural Paintings) भारतीय कला का एक अभिन्न अंग रहे हैं, जो केवल सौंदर्य का प्रतीक नहीं, बल्कि ज्ञान और परंपरा के वाहक भी हैं। इन चित्रों का उपयोग धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में किया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में भित्ति चित्रों के महत्व को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से विस्तृत रूप से प्रस्तुत करता है।

कुंजीभूत शब्द

भित्ति चित्र, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, गुफाओं, मंदिरों, महलों।

भित्ति चित्रों का ऐतिहासिक विकास

भारतीय भित्ति चित्रों की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। प्रागैतिहासिक काल में भी गुफाओं की दीवारों पर चित्र उकेरे गए थे, जिनका प्रमाण भीमबेटका (मध्य प्रदेश) की गुफाओं में मिलता है। इसके बाद अजंता, एलोरा, बाघ और सिगिरिया (श्रीलंका) की गुफाओं में बौद्ध धर्म से संबंधित उत्कृष्ट भित्ति चित्रों का निर्माण हुआ। गुप्त और मौर्य काल में इनका व्यापक विकास हुआ, जबकि मध्यकाल में मंदिरों, महलों और किलों में भित्ति चित्रण की परंपरा अपने चरम पर पहुँची। राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु और केरल में इस कला का अनूठा स्वरूप देखा जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में भित्ति चित्रों का स्थान

1. धार्मिक और आध्यात्मिक संदर्भ: भित्ति चित्रों का उपयोग मंदिरों, बौद्ध विहारों और गुफाओं में धार्मिक ग्रंथों की कहानियों को चित्रित करने के लिए किया जाता था। यह चित्रण चित्रण समाज को नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा देने का एक प्रमुख साधन था।

उदाहरण: अजंता की गुफाओं में जातक कथाओं का चित्रण।

ब्राह्मण परंपराओं में देवी-देवताओं के जीवन प्रसंगों का चित्रण।

2. शिक्षा एवं ज्ञान प्रसार: प्राचीन भारत में भित्ति चित्रों का उपयोग शिक्षा प्रदान करने के लिए किया जाता था। मंदिरों और महलों की दीवारों पर नीतिगत प्रसंगों, महाकाव्यों और लोक कथाओं को उकेरा जाता था। यह चित्रण जनता को सामाजिक मूल्यों और नैतिक आदर्शों से परिचित कराते थे।

उदाहरण: हाम्पी (कर्नाटक) और पाटन (गुजरात) में चित्रित शिल्पकथाएँ।

3. सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रतिबिंब: भित्ति चित्र तत्कालीन समाज की सांस्कृतिक झलक प्रस्तुत करते थे। इन चित्रों में नृत्य, संगीत, पर्व-त्योहार, वेशभूषा और सामाजिक गतिविधियों को चित्रित किया गया।

उदाहरण: राजस्थान और मध्य प्रदेश के किलों में युद्ध, राजदरबार और सामाजिक जीवन के दृश्य।

4. राजनीतिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ: भित्ति चित्र ऐतिहासिक घटनाओं और शासकों के वीरतापूर्ण कार्यों को दर्शाने का एक प्रमुख माध्यम थे।

उदाहरण: रामायण और महाभारत के दृश्यों का चित्रण जो राजनीतिक विचारधारा को प्रतिबिंबित करता है।

5. वास्तुकला और सौंदर्यबोध: भारतीय स्थापत्य कला में भित्ति चित्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मंदिरों, महलों और किलों की दीवारों पर किए गए चित्रण ने न केवल सौंदर्यबोध को को बढ़ाया, बल्कि संरचनाओं को सांस्कृतिक पहचान भी प्रदान की।

उदाहरण: तंजावर के बृहदेश्वर मंदिर और जयपुर के आमेर किले की चित्रकला।

6. प्राकृतिक और वैज्ञानिक पहलू: भित्ति चित्रों में पर्यावरणीय तत्वों, वनस्पतियों, जीवों और प्राकृतिक दृश्यों को भी चित्रित किया गया है। यह भारतीय समाज की प्रकृति और विज्ञान के प्रति जागरूकता को दर्शाता है।

उदाहरण: कोणार्क मंदिर की दीवारों पर उकेरे गए सूर्य संबंधी चित्रण।

भित्ति चित्रों की प्रमुख शैलियाँ

1. अजंता और एलोरा शैली - बौद्ध धर्म से संबंधित गुफा चित्रण।
2. राजस्थानी शैली - मारवाड़, मेवाड़ और बूंदी की राजसी चित्रकला।
3. मुगल शैली - सम्राट अकबर और जहांगीर के काल में विकसित चित्रकला।
4. कांगड़ा और पहाड़ी शैली - प्राकृतिक दृश्य एवं प्रेम प्रसंगों का चित्रण।
5. तमिलनाडु की तंजावुर शैली - दक्षिण भारतीय मंदिरों में विकसित कला।
6. केरल की मंदिर चित्रकला - विशिष्ट रंग संयोजन और धार्मिक भावनाओं का चित्रण।
7. मध्य भारतीय गोंड और भील शैली - आदिवासी समाज की धार्मिक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति।

संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता

आधुनिक समय में भित्ति चित्रों की सुरक्षा और संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो गया है। प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, अतिक्रमण और उपेक्षा के कारण यह कला संकट में है। इसके संरक्षण हेतु निम्नलिखित प्रयास आवश्यक हैं:

1. पुरातात्विक संरक्षण - सरकार और निजी संगठनों द्वारा पुरातन भित्ति चित्रों का पुनरुद्धार।
2. तकनीकी संरक्षण - आधुनिक वैज्ञानिक विधियों का उपयोग कर चित्रों को संरक्षित करना।
3. जनजागरूकता अभियान - कला संरक्षण के प्रति लोगों को शिक्षित और संवेदनशील बनाना।
4. शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में समावेश - विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भित्ति चित्रकला को शामिल करना।
5. डिजिटल संरक्षण - भित्ति चित्रों का डिजिटलीकरण कर ऑनलाइन संग्रह तैयार करना।

निष्कर्ष

भारतीय भित्ति चित्र केवल कला ही नहीं, बल्कि ज्ञान, परंपरा और संस्कृति के संवाहक भी हैं। इन्होंने भारतीय समाज के नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिकता और ऐतिहासिक घटनाओं को संरक्षित

संरक्षित किया है। यह चित्र हमें अतीत की घटनाओं और सांस्कृतिक परंपराओं से जोड़ते हैं। आधुनिक समय में भित्ति चित्रों की सुरक्षा और संरक्षण की दिशा में विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि यह अनमोल धरोहर आने वाली पीढ़ियों तक पहुँच सके।

संदर्भ

1. कला और भारतीय संस्कृति - पं. वासुदेव शरण अग्रवाल
2. अजंता और एलोरा गुफाएँ - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
3. भारतीय चित्रकला का इतिहास - कृष्ण लाल
4. Ancient Indian Art and Architecture - S. R. Rao
5. भारतीय भित्ति चित्र परंपरा - डॉ. रमा शर्मा
6. Traditional Wall Paintings of India - S. K. Sharma

S A H I T Y A

शोध साहित्य